Code No. : SS – 10 – ECON.

उच्च माध्यमिक परीक्षा , 2019

SENIOR SECONDARY EXAMINATION , 2019

अर्थशास्त्र
ECONOMICS

Time : 3 Hours 15 Minutes **Maximum Marks : 80**

परीक्षार्थियों के लिये सामान्य निर्देश

General Instructions to the Examinees :

- परीक्षार्थी सर्वप्रथम अपने प्रश्न प्रत्र पर नामांक अनिवार्यतः लिखें।
  Candidate must Write His / Her Roll No. on the Question Paper Compulsorily .
- सभी प्रश्न अनविार्य हैं।
  All Questions are Compulsory .
- प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दी गई उत्तर पुस्तिका में ही लिखें।
  Write the Answer to each question in the given answer-book only
- जिन प्रश्नों में आन्तरिक खण्ड है, उन सभी के उत्तर एक साथ ही लिखें। For the Questions having more than One Part , the answer to those Parts are to be Writen together in Continuity .
- प्रश्न पत्र के हिन्दी एवं अंग्रेजी रूपान्तर में किसी प्रकार की त्रुटि / अन्तर / विरोधाभास होने पर हिन्दी भा ॥ के प्रश्न को ही सही माने। If there is any Error / Difference / Contradiction in Hindi and English Versions of the Question Paper , the Question of Hindi Version should be Treated Valid .
- यह प्रश्न पत्र चार खण्ड़ों में विभक्त है : A , B , C तथा D .
  This Question Paper Contains FOUR Sections : A , B , C and D

Section	Q. Nos.	Marks Per Question	Word / Page Limit of Answerr
A	1 – 10	1	10 Words
B	11 – 18	2	20 Words
C	19 – 27	4	30 – 40 Words
D	28 – 30	6	250 – 300 Words

- प्रश्न संख्या 28 से 30 में अपन्तरिक विकल्प है।
  Q. Nos. 28 to 30 have Internal Choices . .

Resonance®
Educating for better tomorrow

CLPD
COMMERCE & LAW PROGRAM DIVISION

J-2 Jawahar Nagar, Kota (Rajasthan)-324005
Tel. No. : +0744-6635570 | Website : www.clpd.resonance.ac.in | E-mail : clpd@resonance.ac.in

SECTION – A (खण्ड – A)

Q 1. **अर्थशास्त्र की किस शाखा में हम व्यक्तिगत इकाई का अध्ययन करते है ?**

In which Branch of Economics do we study of Individual Unit ?

[1 Mark]

Ans. **सूक्ष्म अर्थशास्त्र में हम व्यक्तिगत इकाई का अध्ययन करते है।**

In Micro Economics , we study of Individual Unit .

Q 2. **उत्पादन सम्भावना वक्र क्या है ?**

What is the Production Posibility Curve (PPC) ?

[1 Mark]

Ans. एक उत्पादन–संभावना वक्र वह होता है जो दो वस्तुओं की उन सभी उत्पादन–संभावनाओं को दिखाता है जिन्हें एक अर्थव्यवस्था द्वारा दिए हुए साधनों एवं प्रौद्योगिकी के दिए हुए होने पर प्राप्त किया जा सकता है। संक्षेप में, यह चयन संयोगों को बताता है।

Production Possibility Curve (PPC) graphically represents the various possibilities of production of two commodities which can be produced with the given Resources and given State of Technology , assuming that the Resources are Fully Employed , Fully Utilized and Efficiently used .

Q 3. **अर्थव्यवस्था से क्या तात्पर्य है ?**

What is meant by an Economy ?

[1 Mark]

Ans. अर्थव्यवस्था का अर्थ किसी देश का वह सामाजिक, राजनैतिक व आर्थिक संगठन, ढांचा, सरंचना या बनावट से होता है।

Economy is the Country's Social , Political and Economic Organ's afterend Structure , wherein Performing Economic Activities in a Legal Way .

Q 4. **लागत का अर्थ लिखिये।**

Write the meaning of Cost ,

[1 Mark]

Ans. फर्म अपने उत्पाद या निर्गत को तैयार करने में प्रयुक्त आगतों पर जो कुछ भी व्यय करती है, उसे ही अर्थशास्त्र में लागतें कहा जाता है।

Total Expenses , Incurred by a Firm in Producing a Commodity , Service and Output .

Q 5. **उत्पादन से क्या आशय है ?**

What is meant by Production ?

[1 Mark]

Ans. उपयोगिता का सजन ही उत्पादन है।

The Creation of Utility is called Production .

Q 6. **बाजार को परिभाषित कीजिये।**

Define Market .

[1 Mark]

Ans. बाजार शब्द से अभिप्रायः उस समस्त क्षेत्र से है जहाँ वस्तु के क्रेता एवं विक्रेता परस्पर किसी निश्चित कीमत पर एवं निश्चित समय पर उस वस्तु को खरीदने एवं बेचने के लिये तत्पर होते हैं।

Market refers to that Complete Area in which there is a Close Contact (Personal or By any Means of Communication, such as Phone , Telex , Fax, e-mail, etc.) .

Q 7. **दो मध्यवर्ती वस्तुओं के नाम लिखिये।**

Write the Name of Two Intermediate Goods .

[1 Mark]

Ans. गेहूँ एवं कपास

Wheat and Cotton .

Q 8. **वस्तु विनिमय प्रणाली से क्या अभिप्राय है ?**

What is meant by Barter System ?

[1 Mark]

Ans. वस्तु विनिमय प्रणाली से अभिप्रायः मुद्रा के बिना वस्तु और सेवाओं के प्रत्यक्ष विनिमय अथवा आदान–प्रदान करने से है।

A System wherein , Goods are Exchanged for Goods .

Q 9. **राष्ट्रीय आय से आप क्या समझते है ?**

What do you understand by "National Income" ?

[1 Mark]

Ans. किसी देश मे एक वर्ष की अवधि मे उत्पादित समस्त अंतिम वस्तुओ तथा सेवाओ के बाजार मूल्य का योग राष्ट्रीय आय कहलाता है। उसमे विदेशो से प्राप्त शुद्ध साधन आय भी शामिल होती है।

The Total Amount of Income Acquiring to a Country from the Economic Activities (Including Foreign Incomes for Net Sources) in a year's time is known as National Income .

Q 10. **लोकतान्त्रिक व्यवस्था में सरकार बजट किसके समक्ष प्रस्तुत करती है ?**

In a Democratic System , before whom does the Government presents the Budget .

[1 Mark]

Ans. लोकतान्त्रिक व्यवस्था में सरकार संसद के समक्ष बजट प्रस्तुत करती है।

In a Democratic System , the Government presents the Budget before the "Legislature" .

SECTION – B (खण्ड – B)

Q 11. **आर्थिक विश्लेषण की किसी दो मान्यताओं को संक्षेप में समझाइये।**

Explain briefly any TWO Assumptions of Economic Analysis .

[2 Marks]

Ans. आर्थिक विश्लेषण की दो मान्यताऐं है :

- अन्य बातें समान रहें।
- आर्थिक इकाई की विवेकशीलता

Two Assumptions of Economic Analysis are :

- Other Things Remains the Same .
- Rationality of the Economic Unit .

Q 12. **तटस्थता मानचित्र बनाइये।**

Draw an Indifference Map .

[2 Marks]

Ans.

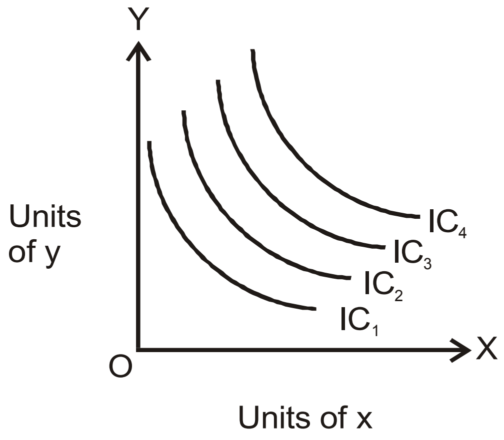

Q 13. **एकाधिकारात्मक प्रतियोगिता को परिभाषित कीजिये।**

Define the Monopolistic Competition . **[2 Marks]**

Ans. प्रो. चैम्बरलिन के अनुसार : "एकाधिकारात्मक प्रतियोगिता की धारणा अर्थशास्त्र की परम्परागत विचारधारा है और व्यक्तिगत कीमतों की या तो प्रतियोगिता के अन्तर्गत या एकाधिकार के अन्तर्गत व्याख्या की जाती है। परन्तु इसके विपरित मेरे विचार में अधिकांश आर्थिक अवस्थाएँ प्रतियोगिता और एकाधिकार का मिश्रण होती है।"

Monopolistic Competition Market refers to that Market form , in which there are many producers of a Commodity which produces Close Substitute Goods and there is Free Entrance and Exit of Firms in the Market .

Q 14. **सकल घरेलू उत्पाद क्या है ? बाजार कीमत पर सकल घरेलू उत्पाद की गणना का सूत्र लिखिये।**

What is Gross Domestic Product (GDP) ? Write the Formula to Calculate Gross Domestic Product at Market Price . **[2 Marks]**

Ans. एक देश की घरेलू सीमा के अन्तर्गत एक वर्ष में उत्पादित समस्त अंतिम वस्तुओं व सेवाओं के बाजार मूल्यों के योग को सकल घरेलू उत्पाद कहा जाता है।

$GDP_{MP} = C + I + G + (X - M)$

यहाँ, GDP_{MP} = बाजार कीमत पर सकल घरेलू उत्पाद

C = उपभोक्ता वस्तुएँ व सेवाएँ ;

I = सकल निजी घरेलू निवेश ;

G = सरकार द्वारा उत्पादित अथवा खरीदी गई वस्तुएँ व सेवाएँ

(X – M) = शुद्ध निर्यात (निर्यात – आयात)

Gross Domestic Product at Market Price is the Sum of Market Value of all Final Goods and Services produced inside the Domestic Territory of a Country by all the Producers, during an Accounting Year .

$GDP_{MP} = C + I + G + (X - M)$

Here GDP_{MP} = Gross Domestic Product at Market Price

C = Consumption Expenditure

I = Investment Expenditure

G = Government Expenditure

(X – M) = Net Exports

Q 15. **आय की दृष्टि में, राष्ट्रीय आय की गणना में आने वाली दो कठिनाइयाँ बताइये।**

In your View , Mention any Two Difficulties in the Measurement of National Income .

[2 Marks]

Ans. आय की दृष्टि में, राष्ट्रीय आय की गणना में आने वाली दो कठिनाइयाँ है :

- स्वयं के रोजगार से प्राप्त आय की गणना कठिन कार्य है।.
- पुरानी , अन्तरिम व मध्यवर्ती वस्तुओं के मूल्यांकन की कठिनाइयाँ

Two Difficulties in the Measurement of National Income :

- It is very Difficult to Calculate Income from Self Employment .
- Problem related to the Evaluation of Old Interim and Intermediate Goods .

Q 16. **समग्र माँग से आप क्या समझते है ?**

What do you understand by Aggregate Demand ?

[2 Marks]

Ans. एक दिए हुए आय व रोजगार के स्तर पर एक साल में अर्थव्यवस्था में जो वस्तुओं और सेवाओं की माँग की जाती है उसे समग्र माँग कहते है। समग्र माँग एक अर्थव्यवस्था में समग्र खर्चे के बराबर होती है।

समग्र माँग = C + I + G + N.E.

यहाँ	C	=	उपभोग खर्चे
	I	=	विनियोग खर्चे
	G	=	सरकारी खर्च
	N.E.	=	शुद्ध निर्यात

Aggregate Demand is the Total Demand of all Final Goods and Services by all the Consumers of the Economy at given Price Level .

Aggregate Demand (A.D.) = C + I + G + N.E.

Here	C	=	Private Consumption
	I	=	Private Investment
	G	=	Government Expenditure
	N.E.	=	Net Exports

Q 17. घाटे का बजट से क्या अभिप्राय है ? समझाइये।

What is meant by Deficit Budget ? Explain .

[2 Marks]

Ans. जब सरकार की बजट प्राप्तियाँ बजट भुगतान से कम हो तब वह घाटे का बजट कहलाता है।

Budget Deficit refers to a Situation when Budget Expenditures of the Government are Greater than the Budget Receipts .

Q 18. नकदविहीन लेन-देन के किन्हीं दो माध्यमों का उल्लेख कीजिये।

Mention any TWO Modes of Cashless Transactions . **[2 Marks]**

Ans. नकदविहीन लेन-देन के दो माध्यम है :

Two Modes of Cashless Transactions are :

- इन्टरनेट बैंकिंग (Internet Bankiing)
- मेबाइल एप (Mobile App)

SECTION – C (खण्ड – C)

Q 19. **तटस्थता वक्र की किन्हीं दो विशेषताओं को रेखाचित्रों की सहायता से समझाइये।**

Explain any TWO Features of Indifference Curve with the help of Diagrams .

[4 Marks]

Ans.

(i) तटस्थता वक्र का ढाल ऋणात्मक होता है – ये बाएं से दांए नीचे की ओर झुके हुए है। अगर उपभोक्ता को समान संतुष्टि के स्तर पर रहना है तो किसी एक वस्तु की मात्रा को घटाने पर ही वह अन्य वस्तु के उपभोग को बढ़ा सकता है। तटस्थता वक्र न तो क्षैतिज सरल रेखा, न ही लम्बवत् सरल रेखा और न ही धनात्मक ढाल वाले होते है।

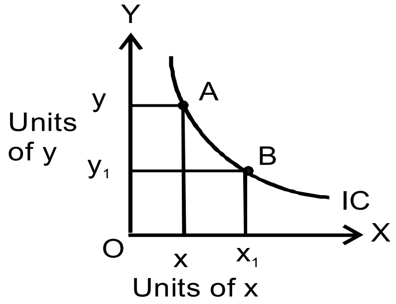

चित्र में A बिन्दु OX_1 - X वस्तु की मात्रा व OY_1 - Y वस्तु की मात्रा के संयोग को बताता है जबकि B बिन्दु OX_2 - X वस्तु की मात्रा व OY_1- Y वस्तु की मात्रा के संयोग को बताता है अगर A बिन्दु से सूचित बंडल को B बिन्दु से सूचित बंडल की तुलना करें तो हम पाएंगे कि B बिन्दु के उपलब्ध होने पर उपभोक्ता B बिन्दु द्वारा दिखाये गये बंडल का चयन करेगा। क्योंकि यहां उसे X वस्तु की मात्रा A बिन्दु द्वारा दिखाये गये बंडल से ज्यादा मिलती है।

(ii) तटस्थता वक्र मूल बिन्दु के उन्नत्तोदर होते है – तटस्थता वक्र की यह विशेषता, घटक प्रतिस्थापन की ह्रासमान सीमान्त दर के कारण होती है।

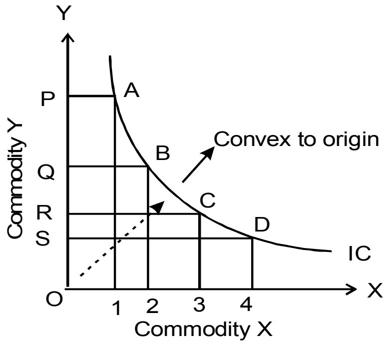

उपरोक्त चित्रानुसार X वस्तु की 2 इकाई मात्रा प्राप्त करने के लिए Y वस्तु की AB मात्रा का परित्याग करना पड़ता है। X वस्तु की 3 इकाई मात्रा प्राप्त करने के लिए Y वस्तु की BC मात्रा का परित्याग करना पड़ता है। जैसे–जैसे उपभोक्ता के पास X वस्तु की अधिक मात्रा होती जाती है वैसे–वैसे उपभोक्ता Y वस्तु को छोड़ने की मात्रा कम करता है। यह घटती हुई सीमान्त प्रतिस्थापन की दर के कारण होता है।

(i) Indifference Curves are Negative Sloping :

Indifference curves are always slopes downwards to the right or negative sloping, because if consumer increases units of one commodity, then to maintain the same level of satisfaction consumer has to decrease the units of another commodity. So as the units of X is increased then units of Y has to be decreased and vice-versa. Due to this negative relationship indifference curves are downward sloping . As in the present diagram as consumer moves from A to B the combination changes from OX + OY to $OX_1 + OY_1$. While moving from A to B, units of X is increased and units of Y is decreased .

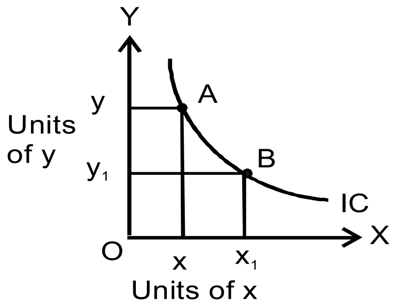

Slope of indifference curve will never be horizontal, vertical or upward sloping because in all these three cases, the basic feature of indifference curve, i.e., same level of satisfaction is derived at different points along the same indifference curve, is neglected .

(ii) Indifference Curves are Convex towards the Origin :

Indifference curves are convex towards the origin because marginal rate of substitution continously decreases (because as the stock of one commodity decreases its marginal importance for the consumer will continously increases and as the stock of another commodity increases its marginal importance for the consumer will continously decreases, therefore he is ready to sacrifice lesser and lesser units of one commodity for the every extra unit of another commodity to maintain the same level of satisfaction).

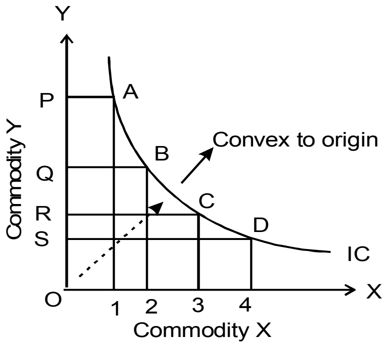

As shown in the diagram when consumer increases one unit of X commodity he decreases Y commodity equal to PQ, whereas for next unit of X commodity he decreases Y commodity equal to QR. As we can see that PQ > QR, it represents that MRS_{xy} is decreasing and due to that indifference curve will become convex towards the origin .

Q 20. **निम्नलिखित संमकों से औसत आगम एवं सीमान्त आगम का आंकलन कीजिये :**

Calculate : Average Revenue and Marginal Revenue from the following given data :

Total Sales (In Units) **कुल बिक्री (इकाई में)**	1	2	3	4
Total Revenue (In ₹) **कुल आगम (रूपये में)**	20	36	48	56

[4 Marks]

Ans.

Average Revenue (AR) **औसत आगम**	20	18	16	14
Marginal Revenue (MR) **सीमान्त आगम**	20	16	12	8

Q 21. **पूर्ण प्रतियोगिता बाजार से क्या अभिप्राय है ? पूर्ण प्रतियोगी बाजार में फर्म का औसत आगम वक्र बनाइये।**

What is meant by Perfect Competitive Market ? Draw an Average Revenue (AR) Curve in Perfect Competitive Market .

[4 Marks]

Ans. बाजार का वह स्वरूप जिसमें क्रेताओं व विक्रेताओं की अत्याधिक संख्या होने के कारण वस्तु विशेष की कीमत को कोई भी फर्म प्रभावित नहीं कर सकती है। पूर्ण प्रतियोगिता बाजार में वस्तु की कीमत का निर्धारण उद्योग द्वारा दी पूर्ति तथा माँग के साम्य द्वारा होता है। एक फर्म वस्तु की कीमत को प्रभावित नहीं कर सकती क्योंकि उसका कुल उत्पादन में योगदान अत्यन्त सूक्ष्म या नगण्य होता है।

The form of market in which there are innumerable (large number) buyers and sellers of a commodity, producing homogenous goods and there is free entrance and exit of firms in the market, is known as Perfect Competition Market .

Q	P	TR	AR	MR
1	10	10	10	10
2	10	20	10	10
3	10	30	10	10
4	10	40	10	10

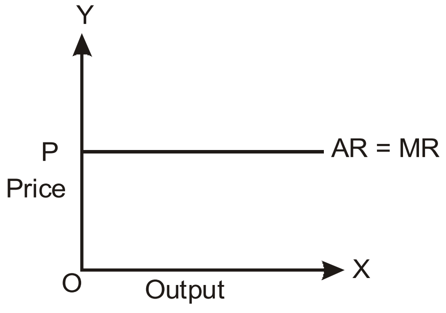

Q 22. **बाजार सन्तुलन की अवधारणा को एक काल्पनिक तालिका की सहायता से संक्षेप में समझाइये।**

Explain Briefly the Concept of Market Equilibrium with the help of Imaginary Table .

[4 Marks]

Ans. संतुलन को एक ऐसी स्थिति के रूप में परिभाषित किया जाता है जहाँ बाज़ार में सभी उपभोक्ताओं तथा फर्मों की योजनाएँ सुमेलित हो जाती हैं। संतुलन की स्थिति में जिस कुल मात्रा का विक्रय करने की सभी फर्में इच्छुक हैं। वह उस मात्रा के बराबर होता है जिसे बाजार में सभी उपभोक्ता खरीदने के इच्छुक है अर्थात् बाजार पूर्ति, बाजार माँग के बराबर होती है। जिस कीमत पर संतुलन यदि किसी कीमत पर बाजार पूर्ति बाजार माँग से अधिक है तो उस कीमत पर बाजार में अधिपूर्ति या पूर्तिआधिक्य कहलाएगा। तथा यदि उस कीमत पर बाजार माँग, बाजार पूर्ति से अधिक है तो वहाँ उस कीमत पर बाजार में अधिमाँग या माँगआधिक्य कहलाएगा। (पूर्ण प्रतियोगिता में शून्य अधिमांग तथा शून्य अधिपूर्ति की स्थिति दिखाई देती है।)

The Price at which the Quantity Demanded is equal to the Quantity Supplied, is known as Equilibrium Price. At this Price there is neither Excess Demand Nor Excess Supply. Therefore there is No Tendency, for the Price to Change. Equilibrium Price under Perfect Competition Market is determined by the Comparative Power of Market Demand and Market Supply . Because in Perfect Competition Market there are large number of Buyers and Sellers who exist in Market . Therefore Share of a Single Seller or a Single Buyer is very minute fraction of Total Supply and Total Demand of the Market. Therefore an Individual Seller or Buyer is unable to affect the Market Supply , Market Demand and Market Prices

P_x	D_M	S_M
100	10000	2000
200	8000	4000
300	6000	6000
400	4000	8000
500	2000	10000

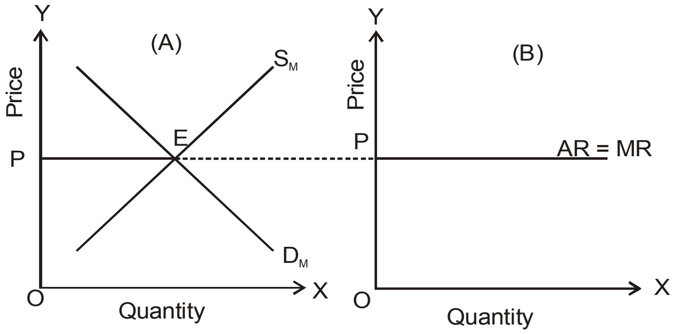

Q 23. **राष्ट्रीय आय की किन्हीं चार विशेषताओं का वर्णन कीजिये।**

Describe any FOUR Features of National Income . **[4 Marks]**

Ans. राष्ट्रीय आय की विशेषताऐं निम्न प्रकार से है :

- राष्ट्रीय आय का सम्बन्ध एक देश की अर्थव्यवस्था से होता है।
- राष्ट्रीय आय का सम्बन्ध एक निश्चित अवधि, जो सामान्यतः एक वित्तीय–वर्ष की होती है, (भारत में एक अप्रैल से अगले वर्ष के 31 मार्च तक)।
- राष्ट्रीय आय का सम्बन्ध एक देश के निवासियों की आर्थिक–क्रियाओं से होता है किन्तु वर्तमान में देश के भौगोलिक क्षेत्र में निवासियों और गैर निवासियों की आर्थिक–क्रियाओं का अध्ययन भी इसमें शामिल होता है।

- राष्ट्रीय आय का सम्बन्ध उत्पादक आर्थिक–क्रियाओं से होता है अर्थात् इसमें अनुत्पादक क्रियाओं को सम्मिलित नहीं किया जाता है।

Features of National Income are :

- National Income is related to National Income .
- National Income is related to a Definite Time Period .
- National Income is related to the Economic Activities of a Country .
- National Income is related to the Productive Economic Activities .

Q 24. मुद्रा के किन्हीं चार कार्यो को समझाइये।

Explain any FOUR Functions of Money .

[4 Marks]

Ans. मुद्रा के कार्य :

मुद्रा के मुख्य कार्य :

- विनिमय का माध्यम : आधुनिक युग में मनुष्य का संपूर्ण जीवन विनिमय पर आधारित है तथा मुद्रा विनिमय के माध्यम का कार्य करती है। आज वस्तुओं व सेवाओं का क्रय–विक्रय मुद्रा के द्वारा किया जाता है।
- मूल्य मापक : मुद्रा समाज द्वारा उत्पन्न सभी वस्तुओं एवं सेवाओं के मूल्य मापक का कार्य करती है। जिस प्रकार लम्बाई को मीटर में वजन को किलो ग्राम में तथा तरल वस्तुओं को लीटर में मापा जाता है। ठीक उसी प्रकार वस्तुओं और सेवाओं के मूल्य को मुद्रा में मापा जाता है मुद्रा का मूल्य मापक कार्य हिसाब या लेखे की इकाई (Unit of Account) भी कहलाती है।
- स्थगित (भावी) भुगतानों का मान : मुद्रा केवल वर्तमान भुगतानो के मान का कार्य ही नहीं करती बल्कि मुद्रा ऐसे मुगतानों के लिए भी उचित आधार है जो तत्काल न करके भविष्य में किये जायेगें। आज का युग साख युग है जिसमें अधिकांश व्यापारिक सौदे साख पर चलते है। यह साख या उधार मुद्रा के रूप में ही दी जाती है।
- मूल्य संचय का साधन : मुद्रा का दूसरा गौण कार्य मूल्य का संचय करना है। कोई भी व्यक्ति अपनी आय में से बचत कर सकता है तथा इस बचत को मुद्रा के रूप में सुरक्षित रख सकता है। मुद्रा में क्रय शक्ति होती है जिसे संचित करके रखा जाता हैं।

Functions of Money are :

Primary Functions :

- **Medium of Exchange :** Money serves as a Medium of Exchange and Facilitates the Buying and Selling of Goods , thereby Eliminating the Need for Double Coincidence of Needs and Wants as under Barter .
- **Measure of Value :** Money has also Removed the Difficulty of Barter System by Serving as a Common Measure of Value . The Values of Various Commodities are Expressed in Terms of Money . Money as a Measure of Value has made Transactions Simple and Easy .
- **Standard of Deferred Payments :** Money has always been used as a Standard of Deferred Payment . This Function of Money has Attained More Importance in Modern Times with the

Extension of Trade based on Credit . As a result of this function , it has become possible to Express Future Payments in Terms of Money .

- **Store of Value :** Classical Economists did not Recognize the Store of Value Function of Money . Keynes laid Stress on this Function of Money . People Store Money to Meet Unforeseen Contingencies .

Q 25. समष्टि आर्थिक साम्य को रेखाचित्र की सहायता से समझाइये।

Explain Macro Economic Equilibrium with the help of a Diagram .

[4 Marks]

Ans. समष्टि आर्थिक साम्य AD – AS मॉडल द्वारा अल्पकालीन संतुलन अर्थव्यवस्था की वास्तविक स्थिति को बताता है। मौद्रिक एवं राजकोषिय नीति किस प्रकार कारगार सिद्ध होती है, यह AD - AS मॉडल द्वारा बताया गया है।

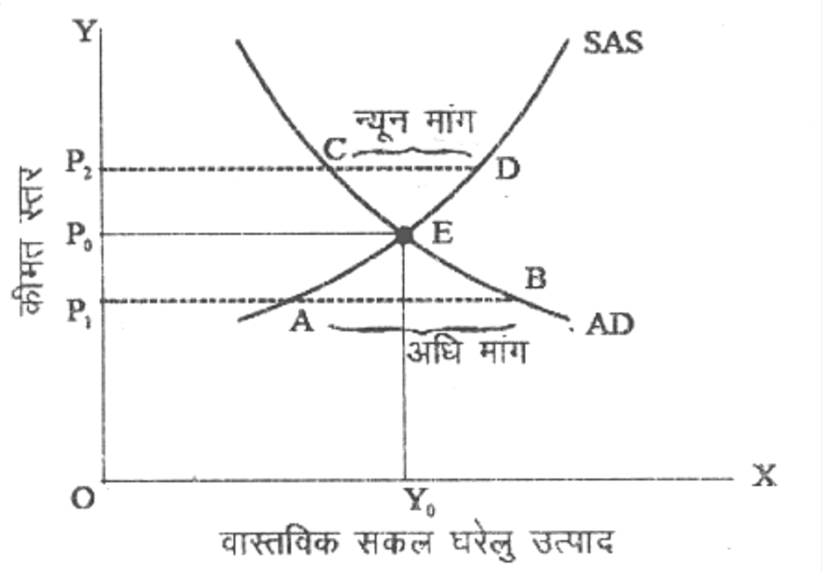

समग्र मांग (AD) अल्पकालीन पूर्ति वक्र (SAS) के बराबर होने पर साम्य E होता है। यदि कीमत P_2 होती है तो समग्र पूर्ति, कहते है। ऐसी स्थिति में उत्पादक उत्पादन में कमीं करता है। मांग कम होने पर वह उत्पादित माल को बेच नहीं पाता है। कीमत क्रमशः कम होने लगती है और पुनः P_0 साम्य कीमत को प्राप्त करती है।

इसके विपरित यदि कीमतें OP_1 होती है तो समग्र मांग समग्र पूर्ति की अपेक्षाकत अधिक होती है, (AB) जिसे अधिक्य मांग कहा जाता है। अधिक मांग उत्पादक को अधिक उत्पादन के लिए प्रेरित करती है।

उत्पादक द्वारा उत्पादन साधनों की मांग बढ़ने पर साधन लागत में वद्धि होती है।

अन्ततः वस्तुओं की कीमत बढ़ने लगती है और पुनः साम्य P_0 कीमतों पर स्थापित होता है। दीर्घकाल में साम्य तब होता है जब समग्र मांग, दीघकालीन समग्र पूर्ति वक्र के बराबर होता है। दीर्घकालीन पूर्ति वक्र GDP लम्बवत् होने पर सामर्थ्य GDP के बराबर होता है। दीर्घकाल में वास्तविक GDP, सामर्थ्य GDP के बराबर होती है।

Short Term Equilibrium tells the Actual Condition of the Economy . Actual GDP remains close to Potential GDP . The Aggregate Demand (AD) – Aggregate Supply (AS) Model informs as to how are the Monetary and Fiscal Policies become Effective .

When the Aggregate Demand (AD) is Equal to Short Term Supply Curve (SAS) , the Equilibrium is at E , where Income OY_0 and Price Level P_0 are Determined . If the Price is P_2 , the Aggregate Supply is Comparatively More than Aggregate Demand which is called Minimum Demand (CD) . In such a situation , the Producer cuts down the Production . As the Demand is Less , the Produced Goods cannot be Sold and these Goods are Stored as Stock . The Costs begins to go Down and Again attain the Equilibrium Price P .

Opposed to this , if the Prices are OP_1 , then the Aggregate Demand is Comparatively More than Aggregate Demand which is called Predominant Demand (AB) . More Demand Encourages More Production . As the Producers Demand more means of Production , it leads to an Increment in Investment . Finally , the Price of Goods begins to Increase and Equilibrium P_0 is again Attained in the Prices . In the Short Term , Monetary Wage Level is Stable and Actual GDP may be More or Less than Potential GDP . In the Long Term , Equilibrium is Attained when Aggregate Demand is Equal to Long Term Aggregate Supply Curve . The Long Term Supply Curve GDP is Vertical and so is Equal to Potential GDP in the Long Term , Actual GDP is Equal to Potential GDP . . .

Q 26. **यदि सीमान्त उपभोग प्रवत्ति 0.8 है , तो निवेश गुणांक का मान ज्ञात कीजिये।**

If the Marginal Propensity to Consume (MPC) is 0.8 , Calculate the Value of Investment Multiplier .

[4 Marks]

Ans.

$$k = \frac{1}{1 - MPC} \quad \Rightarrow \quad k = \frac{1}{1 - 0.8} \quad \Rightarrow \quad k = 5$$

Q 27. **आपकी दष्टि से , बजट के कोई चार उद्देश्य बताइये।**

In your view , State any FOUR Objectives of Budget . **[4 Marks]**

Ans. बजट एक ऐसा साधन है जिसके द्वारा वित्तीय प्रशासन की सभी विधियों को सम्बन्धित किया जाता है, उनकी तुलना की जाती है एवं समन्वय स्थापित किया जाता है। यह सरकार की प्रत्याशित आय एवे सरकार के अप्रत्याशित व्यय संसद के समक्ष प्रस्तुत करती है और संसद की स्वीकति होने के पश्चात् इसके प्रस्ताव के अनुसार ही कार्य किये जाते है। बजट के निम्न प्रमुख उद्देश्य है :

- सरकारी बजट से न केवल विकास प्रभावित होता है बल्कि विकास की दिशा भी बजट से निर्धारित होती है।
- उत्पादन बढ़ाने में भी बजट की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण होती है बजट में राहत द्वारा दिये गये करारोपण सम्बन्धी रियायतों एवं शुल्क में राहत द्वारा दिये गये प्रोत्साहन उत्पादन वद्धि में सहायक होते है।
- सामान्यता सरकार बजट के माध्यम से नये कर लगाकर और जनता से ऋण लेकर उसकी क्रय शक्ति में कमी करते हुये कीमत स्तर को नियन्त्रित करती है।
- देश के आर्थिक व सामाजिक विकास को गति देना एवं आय व धन का पुनर्वितरण करना।

The Objective of the Budget is to provide Direction to the Economy of the Country . The Country's Economy Setup is Directly Affected by the Government . The Main Objectives of a Budget are :

- Besides Affecting the Growth and Development of a Country , the Budget also provides a Direction to it .

- The Budget is also very important in Increasing Production . The Tax Related Concessions and Other Reliefs helps in Increment in the Production .
- Generally , the Government Proposes New Taxes and Collects Loans from the Populace so as to Control its Purchasing Power in order to Control the Price Levels .
- To Provide Momentum to Economic and Social Growth and Redistribution of Income and Wealth .

SECTION – D (खण्ड – D)

Q 28. **माँग के दो तत्व बताइये। माँग के नियम की व्याख्या रेखाचित्र की सहायता से कीजिये।**

State TWO Elements of Demand . Explain the Law of Demand with the help of a Diagram .

OR

माँग की कीमत लोच किसे कहते है ? माँग की कीमत लोच की किन्हीं दो श्रेणियों को रेखाचित्रों की सहायता से समझाइये।

What is the Price Elasticity of Demand ? Explain any TWO Types of Price Elasticity of Demand with the help of Diagrams .

[6 Marks]

Ans.

माँग में निम्न तत्व सम्मिलित होते है :

- किसी वस्तु की इच्छा या आवश्यकता
- इस वस्तु को खरीदने के लिए मुद्रा या पैसा

माँग के नियम

माँग का नियम वस्तु के मूल्य और माँग के सम्बन्ध को स्पष्ट करता है। माँग वस्तु के मूल्य में वद्धि होने पर उसकी मात्रा कम क्रय की जाती है और मूल्य में कमी होने पर उसकी मात्रा अधिक क्रय की जाती है। माँग और मूल्य के इस विपरीत सम्बन्ध को ही माँग के नियम द्वारा स्पष्ट किया गया है। इस नियम को निम्न प्रकार परिभाषित किया गया है : प्रो. मार्शल के शब्दों में, ''कीमत में कमी होने पर माँग की मात्रा में वद्धि तथा कीमत में वद्धि होने पर माँग की मात्रा में कमी होती है।''

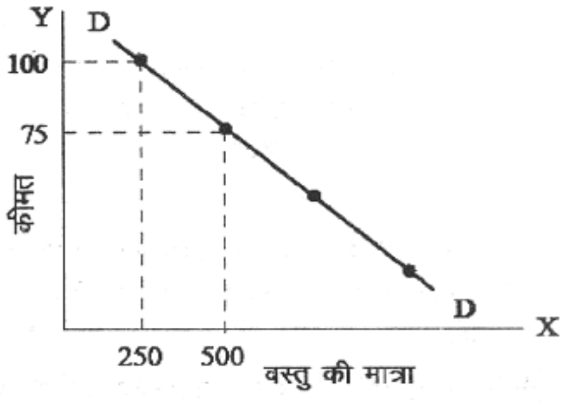

सरल शब्दों मे हम कह सकते है कि माँग का नियम हमें यह बताता है कि अन्य बातें समान रहने पर वस्तु की कीमत में कमी आने पर उसकी अधिक मात्रा तथा कीमत में वद्धि होने पर उसकी कम मात्रा खरीदी जाती है। संक्षेप में, यह कीमत और माँग में विपरीत संबंध बताता है।

मांग का नियम एक गुणात्मक कथन है, यह नियम माँग में होने वाले परिवर्तनों की दिशा की ओर संकेत करता है, इन परिवर्तनों की माप नहीं करता।

नियम की निम्न प्रमुख मान्यतायें है :

(i) उपभोक्ता की आय स्थिर रहनी चाहिए।

(ii) उपभोक्ता की रूचि एंव आदत में कोई परिवर्तन नहीं होना चाहिए।

(iii) सम्बन्धित वस्तुओं के मूल्य में कोई परिवर्तन नहीं होना चाहिए।

(iv) किसी अन्य स्थानापन्न वस्तु का विकास नहीं होना चाहिए अथवा ग्राहक को उसका पता नहीं चलना चाहिए।

(v) वस्तु के मूल्य में और अधिक परिवर्तन की सम्भावना नहीं होनी चाहिए।

(vi) वस्तु प्रतिष्ठाजनक नहीं होनी चाहिए।

अथवा

माँग की कीमत लोच - माँग की कीमत लोच यह स्पष्ट करती है कि वस्तु के मूल्य में एक निश्चित परिवर्तन होने पर उसकी माँग में कितना परिवर्तन होगा। इस प्रकार, किसी वस्तु के मूल्य में एक निश्चित परिवर्तन होने पर उसकी माँग की मात्रा में जो आनुपातिक परिवर्तन होगा, उसकी माप ही माँग की कीमत लोच है।

श्रीमती रॉबिन्सन के अनुसार, "किसी कीमत पर मांग की लोच कीमत में थोड़े परिवर्तन के प्रत्युत्तर में क्रय की गई मात्रा के आनुपातिक परिवर्तन को कीमत के आनुपातिक परिवर्तन से भाग देने पर प्राप्त होती है।" सूत्र के रुप में इसे निम्न प्रकार व्यक्त किया जा सकता है :

माँग की लोच

$$= \frac{\text{माँगी गयी मात्रा में आनुपातिक/प्रतिशत/मात्रात्मक परिवर्तन}}{\text{मूल्य में आनुपातिक/प्रतिशत/मात्रात्मक परिवर्तन}} \qquad ed = \frac{\Delta Q}{\Delta P}$$

माँग की लोच की श्रेणियां :

किसी वस्तु के मूल्य में परिवर्तन हो जाने पर उसकी माँग में भी परिवर्तन हो जाता है परन्तु मूल्य में परिवर्तन का सभी वस्तुओं की माँग पर समान प्रभाव नहीं पड़ता। कुछ वस्तुओं की माँग अधिक लोचदार होती है जबकि कुछ वस्तुओं की माँग कम लोचदार होती है। इस आधार पर माँग की लोच को निम्न पाँच भागों में बाँटा गया है।

(1) पूर्णतया लोचदार माँग (Perfectly Elastic Demand $e_d = \infty$) : जब किसी वस्तु की माँग उसके मूल्य में बिना किसी परिवर्तन के ही अथवा मूल्य में बहुत कम परिवर्तन होने पर स्वयं ही घटती बढ़ती रहती है तो इसे पूर्णतया लोचदार माँग कहते हैं। यह एक काल्पनिक विचार है। वास्तविक जीवन में ऐसी कोई वस्तु नहीं है जिसकी माँग पूर्णतया लोचदार हो। इसके वक्र का आकार क्षैतिज अथवा अक्ष के समानान्तर होता है।

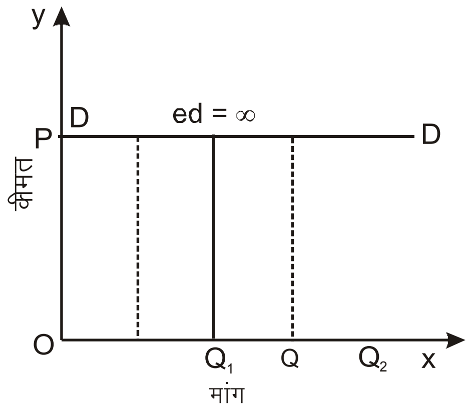

Relatively Elestic Demand

(2) इकाई से अधिक लोचदार माँग (Highly Elastic Demand $e_d > 1$) : जब किसी वस्तु के मूल्य में होने वाला परिवर्तन कम होता है और माँगी गई मात्रा में होने वाला परिवर्तन अधिक होता है तो इसे इकाई से अधिक लोचदार माँग कहते हैं। प्रायः विलासिता की वस्तुओं की माँग इकाई से अधिक लोचदार होती है। इसे निम्न वक्र की सहायता से स्पष्ट किया जा सकता है :

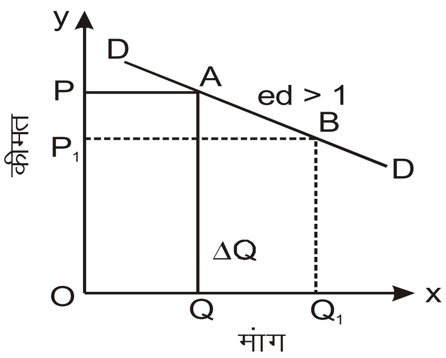

Unit Elasticity of Demand

The TWO Elements of Demand are :

- Willingness to Buy a Commodity
- Resources to Buy that Commodity

The Law of Demand :

In law of demand we studies the impact on quantity demanded due to change in price of concerned commodity, when rest of the determinants remains constant.

According to law of demand, "More quantity is demanded due to fall in price and less quantity is demanded due to rise in price, when other things remains constant." Thus law of demand shows the negative relationship between price of a commodity and its quantity demanded. According to law of demand, demand of a commodity is a function of its price .

$$Dx = f(Px)$$

here, Dx = Demand of X commodity, Px = Price of X commodity

Law of demand is only qualitative statement (because it only indicates the direction in which the demand will change, whether it rises or falls). Law of demand says that demand varies inversely with price, not necessarily propotionately.

Assumptions of Law of Demand :

The phrase, "other things remains constant" used in law of demand, represents assumptions of law of demand. The law of demand would be applicable only if other things would remains the same, (ceteris paribus) means the determinants of demand other than price of the concerned commodity remains unchanged. The following are some important assumptions of law of demand :-

(i) Price of other related goods remains constant.

(ii) Income of the consumer remains unchanged.

(iii) Psychological factors like habits, taste, preferences of the consumers remains constant.

(iv) There is no expectation about the future price changes, etc.

Explanation of the Law :

According to law of demand consumer demand less of the commodity when it becomes costlier and consumer demand more of the commodity when it becomes cheaper. In other words it shows the inverse relationship between price of concerned commodity and its quantity demanded. This inverse relationship can be seen in demand schedule and demand curve. The negative slope of the demand curve is due to the inverse relationship between price of the commodity and quantity demanded. When the price of commodity was OP the consumer was demanding OQ units of the commodity. As the price rises to OP_1 the demand falls to OQ_1 (which is contraction in demand) and as the price falls to OP_2 the demand rises to OQ_2 (which is expansion in demand).

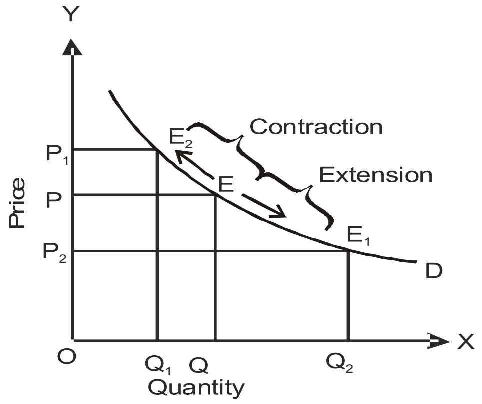

P_x	D_x
10	100
20	80
30	60

OR

Price Elasticity of Demand measures the Degree of Responsiveness in Quantity Demanded due to Change in Price, when other factors remains Constant . It can be measured by the following methods :

A. **Percentage Method :** According to this method degree of elasticity of demand can be calculated by the ratio between percentage change in quantity demanded and percentage change in price of the commodity. For this, first we have to calculate the percentage change in price and percentage change in quantity demanded, which we can calculate by using the given formulae :

(i) % Change in Price = $\frac{\Delta p}{p} \times 100$

(ii) % change in Quantity Demanded = $\frac{\Delta Q}{q} \times 100$

Here, p = change in price, q = change in quantity demanded,

P = Initial price, Q = initial quantity demanded.

After that we can calculate the degree of elasticity by using the following formulae :

$$ep = \frac{\%\ \text{Change in Quantity Demand}}{\%\ \text{Change in Price}}$$

B. **Proportionate Method :** According to this Method the Co-efficient of Price Elasticity of Demand can be calculated by the Ratio between Proportionate Change in Quantity Demanded and Proportionate Change in Price .

$$ep = \frac{\text{Proportionate Change in Quantity Demanded}}{\text{Proportionate Change in Price}}$$

$$= \frac{\frac{\Delta Q}{q}}{\frac{\Delta P}{p}} = \frac{\Delta Q}{q} \times \frac{p}{\Delta P} = \frac{\Delta Q}{\Delta P} \times \frac{p}{q}.$$

Here, q = Change in Quantity Demanded, p = Change in Price,

Q = Initial Quantity Demanded, P = Initial Price

Degrees of Price Elasticity of Cemand can be classified as :

(a) **Perfectly Elastic Demand :** When the quantity demanded changes too much (increases that much that it may becomes infinite or decreases that much that it may becomes zero) with the very minute change in its price, then it is termed as perfectly elastic demand . This condition can be found in the perfect competition market where the commodity produced by different firms is identical in every aspects, means the commodity is homogenous . But this condition can not be found in practical world . In this case the demand curve would be horizontal or parallel to X axis and that's why slope of the demand curve would be zero. In this case the degree of elasticity of demand is infinite (ep =) because of too much change in quantity demanded .

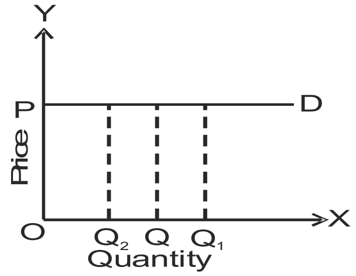

(b) **Highly Elastic Demand (or Elastic Demand or More Elastic Demand) :** When the percentage (or proportionate) change in quantity demanded is more than the percentage (or proportionate) change in price, then it is termed as highly elastic demand. In other words the percentage increase in quantity demanded is more than the percentage decrease in price or the percentage decrease in quantity demanded is more than the percentage increase in price . It is a realistic condition and can be found in the case of luxurious goods, like jewellery, mobile phones, etc. In such cases demand curve would be more steeper than perfectly elastic demand but less steeper than unitary elastic demand. The degree of elasticity of demand in this case is greater than one (ep > 1).

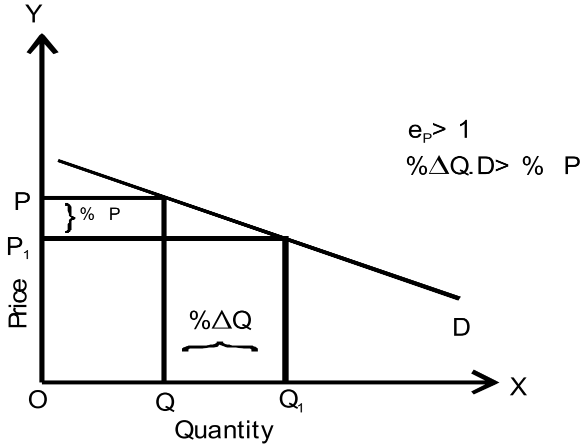

Q 29. **कुल आगम एवं कुल लागत विधि द्वारा फर्म के सन्तुलन की व्याख्या रेखाचित्र की सहायता से कीजिये।**

Explain the Equilibrium of a Firm by Total Revenue (TR) and Total Cost (TC) Approach with the help of Diagram .

OR

सीमान्त आगम एवं सीमान्त लागत विधि द्वारा फर्म के सन्तुलन की व्याख्या रेखाचित्र की सहायता से कीजिये।

Explain the Equilibrium of a Firm by Marginal Revenue (MR) and Marginal Cost (MC) Approach with the help of Diagram .

[6 Marks]

Ans.

सभी फर्मों का उद्देश्य लाभ को अधिकतम करना होता है। फर्में उत्पादन की ऐसी मात्रा निर्धारित करती है जिस पर उसके लाभ अधिकतम होते है। इसी उद्देश्य से वह उत्पादन की मात्रा को कभी बढ़ाता है तो कभी घटाता है, जिससे उस साम्यावस्था को प्राप्त कर सके जिस पर अधिकतम लाभ प्राप्त होते है। आगम और लागत का अन्तर लाभ अथवा हानि को बताता है। यदि किसी फर्म का आगम उसकी लागत से अधिक होता है तो फर्म को लाभ प्राप्त होता है इसके विपरीत यदि आगम लागत से कम होता है, तो हानि होती है।

- कुल आगम कुल लागत विधि।

  फर्म का संतलुन : इस विधि के अनुसार फर्म का संतुलन उस स्थिति में होगा जहाँ कुल आगम और कुल लागत में अंतर सर्वाधिक होता है अर्थात् TR और TC वक्रों में अन्तर अधिकतम होता है। फर्म उस उत्पादन मात्रा पर साम्यावस्था में होगी जब उसे प्राप्त होने वाला लाभ अधिकतम होता है।

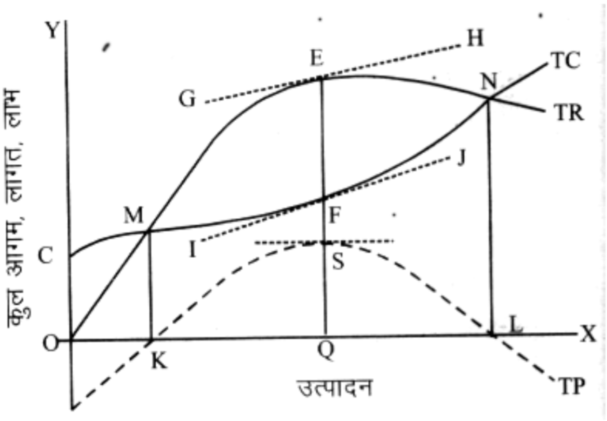

* इस चित्र में x अक्ष पर उत्पादन मात्रा और y अक्ष पर कुल आगम, कुल लागत और लाभ की मात्रा दर्शायी गयी है।
* कुल आगम (TR) वक्र शून्य से प्रारम्भ होता है, इससे यह बात स्पष्ट होती है कि अगर उत्पादन की मात्रा शून्य होती है तो कुल आगम भी शून्य होता है और जैसे जैसे उत्पादन बढ़ता है तो कुल बढ़ने पर आगम वक्र दायें ऊपर की ओर उठता है।
* कुल लागत वक्र (TC) C बिन्दू से प्रारम्भ होता है एवं OC स्थिर लागत होती है। उत्पादन शून्य होने पर भी फर्म को OC के बराबर लागत वहन करनी पड़ती है।
* कुल आगम और लागत के अन्तर से कुल लाभ (TA) अर्जित होता है। कुल लाभ वक्र (TP) को TR और TC वक्र के अन्तर से व्युत्पन्न किया है।
* प्रारम्भ में K उत्पादन के स्तर पर चूंकि TC>TR होता है अर्थात् कुल लागत, कुल आगम से अधिक होने पर फर्म को हानि होती है। व्युत्पन्न लाभ वक्र (TP) ऋणात्मक क्षेत्र में स्थित है।
* M बिन्दु पर जब कुल आगम (TR), कुल लागत (TC) के बराबर होता है तो फर्म को न लाभ होता है न ही हानि। अतः इस अवस्था को समस्थिति बिन्दु कहते है। कुल लाभ वक्र (TP) X - अक्ष पर स्पर्श करता है अर्थात् फर्म को K उत्पादन स्तर पर लाभ शून्य प्राप्त है।
* उत्पादन K व L बिन्दुओं के मध्य होता है, तो कुल आगम कुल लागत से अधिक होती है। TR वक्र इस क्षेत्र में TC वक्र से ऊपर है अथवा TR>TC। इसी प्रकार कुल लाभ भी धनात्मक है।
* कुल आगम और कुल लागत वक्रों पर ये स्पर्श रेखाएं जहाँ स्पर्श करती है (E और F बिन्दु पर) उन पर TR और TC वक्र के मध्य दूरी अधिकतम होती है, इसलिए लाभ भी अधिकतम होते है। साम्य उत्पादन मात्रा OQ निर्धारित होती है। अधिकतम लाभ की मात्रा SQ होती है।
* KQ के मध्य उत्पादन पर TR और TC के मध्य अन्तर बढ़ता हुआ होता है अर्थात् कुल लाभ बढ़ती दर से प्राप्त होते है S बिन्दु पर अधिकतम होते है। QL उत्पादन पर भी लाभ प्राप्त होते है किन्तु TR और TC का अन्तर कम होता जाता है तो लाभ भी घटने लगते है। TP वक्र नीचे की ओर गिरता है।
* N बिन्दु पर पुनः कुल आगम और कुल लागत बराबर होते है। यह समस्थिति बिन्दु कहलाता है। इस पर न लाभ और न हानि की स्थिति होती है।

*	OL उत्पादन मात्रा के बाद यदि फर्म और अधिक उत्पादन करती है तो कुल लागत बढ़ती जाती है और कुल आगम घटता है (TC>TR)। फर्म को हानि होती है। कुल लाभ (TP) वक्र x के नीचे होता है।

चित्र के आधार पर फर्म का संतुलन OQ उत्पादन मात्रा पर होता है, क्योंकि इस उत्पादन मात्रा पर कुल आगम (TR) और कुल लागत (TC) का अन्तर अधिकतम होता है। अर्थात् लाभ मात्रा SQ अधिकतम होती है।

आलोचना

(a) कुल आगम और कुल लागत के मध्य अधिकतम दूरी ज्ञात करना कठिन होता है। कई स्पर्श रेखाएँ खींचने पर वास्तविक बिन्दु प्राप्त होता है।

(b) चित्र के आधार पर प्रति इकाई कीमत को ज्ञात करना सम्भव नहीं होता क्योंकि कीमत को प्रत्यक्षतः नहीं दिखाया जाता है।

अथवा

सीमान्त आगम और सीमान्त लागत विधि

सीमान्त आगम का अर्थ है एक फर्म को एक अतिरिक्त इकाई के विक्रय करने पर जो अतिरिक्त आय प्राप्त होती है। इसी प्रकार सीमान्त लागत से तात्पर्य होता है कि फर्म को एक अतिरिक्त इकाई के उत्पादन पर जो अतिरिक्त व्यय करना पड़ता है। जब सीमान्त आगम (MR) के बराबर सीमान्त लागत (MC) हो तो वह फर्म की आदर्श उत्पादन मात्रा होती है, अर्थात् जब MC = MR होगा तब फर्म का लाभ अधिकतम होगा।

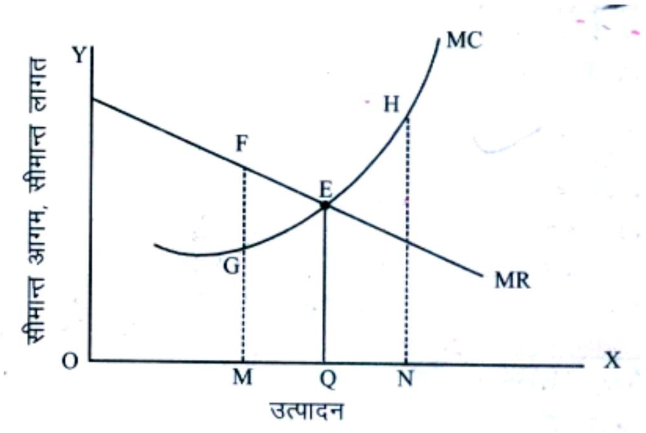

चित्र की व्याख्या

*	x अक्ष पर उत्पादन मात्रा और y अक्ष पर सीमान्त आगम (MR) और सीमान्त लागत (MC) दर्शायी गई है।

*	सीमान्त आगम वक्र (MR) और सीमान्त लागत वक्र (MC) है। अपूर्ण प्रतियोगिता अथवा एकाधिकार बाजार में सीमान्त आगम वक्र नीचे गिरता हुआ होता है।

*	फर्म के सन्तुलन की प्रथम शर्त होती है कि सीमान्त आगम (MR), सीमान्त लागत (MC) के बराबर होती है। यह साम्य बिन्दु E द्वारा दर्शाया गया है। उत्पादन मात्रा OQ पर लाभ अधिकतम होगें।

*	यदि उत्पादन मात्रा OM होती है तब सीमान्त आगम (FM) सीमान्त लागत (GM) की तुलना में अधिक होता है। फर्म और अधिक लाभ प्राप्त करने के लिए उत्पादन में वद्धि करती है।

*	यदि उत्पादन का स्तर ON होता है, तब सीमान्त लागत (HN) सीमान्त लागत (IN) से अधिक होती है। इस स्थिति में फर्म को उत्पादन करने की हानि होती है। (EHI)

इस प्रकार फर्म का संतुलन E बिन्दु पर होता है जहां MC = MR होता है, OQ उत्पादन मात्रा निर्धारित होती है जिस पर लाभ अधिकतम होते है। फर्म के संतुलन की दूसरी शर्त यह होती है कि MC वक्र MR वक्र को नीचे से काटना चाहिए (पूर्ण प्रतियोगिता में आवश्यक)।

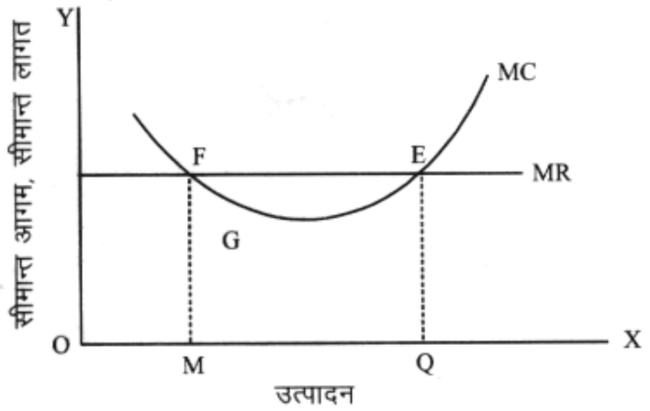

चित्र की व्याख्या

*	E बिन्दु पर सीमान्त आगम (MR) सीमान्त लागत (MC) के बराबर है। अर्थात MC = MR। पहली साम्य शर्त यहाँ पूरी होती है। दूसरी शर्त MC, MR वक्र को नीचे से काटना चाहिए भी पूरी होती है। इस तरह OQ उत्पादन मात्रा पर फर्म को अधिकतम लाभ अर्जित होते है। यह फर्म का संतुलन कहलाता है।

*	यदि फर्म उत्पादन मात्रा OM निर्धारित करती है तो प्रथम शर्त (MC = MC) F बिन्दु पर पूर्ण होती है। किन्तु दूसरी शर्त के अभाव में फर्म अधिकतम लाभ अर्जित नहीं कर सकती। F बिन्दु से पूर्व MC > MR हानि को दर्शाता है।

अतः फर्म का संतुलन OQ उत्पादन स्तर पर होता है जहाँ दोनों शर्तें पूर्ण होती है।

(i)	MR = MR	(ii)	MC वक्र MR वक्र को नीचे से काटता है।

सीमान्त आगम सीमान्त लागत विधि श्रेष्ठ है क्योंकि सरलता से अधिकतम लाभ और उत्पादन मात्रा ज्ञात की जा सकती है। फर्म के औसत आगम और औसत आगम वक्रों का उपयोग करने पर प्रति इकाई कीमत भी ज्ञात की जा सकती है।

According to this method , the Firm's Equilibrium will be in that condition when the Difference between the Revenue and Cost will be the Most i.e. the Difference between the TR and TC Curves is Maximum ..

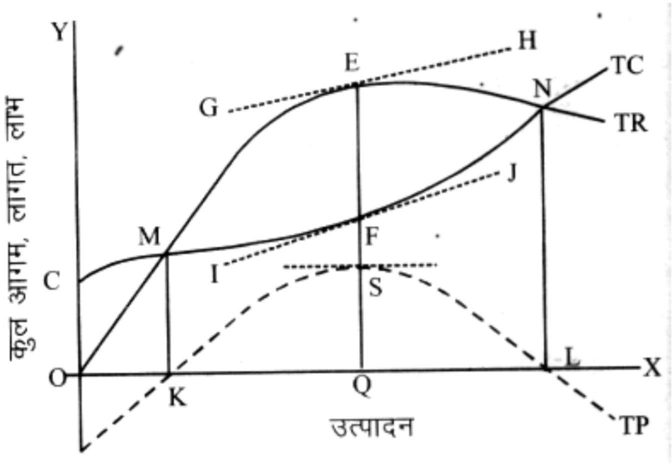

Impertect and Monopoly Market :

In the Graph , Output Quantity is shown on x-axis and Total Revenue (TR) , Total Cost (TC) and Quantity of Profit are shown on y-axis . Total Revenue (TR) Curve begins from Zero . If the Output Quantity is Zero , the Total Revenue will be Zero as well . As the Output Increases , Total Revenue Increases and the Revenue Curve Rises Up to the Right . Total Cost (TC) Curve begins from Point C and OC is the Fixed Cost . Even if the Output is Zero , the Firm has to bear Expenditure Equal to OC . The Difference between Total Revenue (TR) and Total Cost (TC) gives the Total Profit (TP) . The TP Curve is derived from the Difference between TR and TC Curve .

Initially TC > TR at Output Level 'K' derives Total Profit (TP) Curve , which is located in Negative Region .On Point M , when the Total Revenue (TR) is Equal to Total Cost (TC) the Firm makes Neither Profit , Nor Loss . This Condition is called Break Even Point i.e. Zero Profit at Point 'K' . When the Output is between Point K and L , the Total Revenue is More than Total Cost . In this Region , TR Curve is above TC Curve i.e. TR > TC and Total Profit is Positive . Tangents GH and IJ are drawn to find the Maximum Difference between TR and TC . The Distance between TR and TC Curves is the Most at Points E and F , where these Tangents Touch Total Revenue and Total Cost Curves . The Equilibrium Output Quantity is OQ on this Out Level . Thus the Quantity of Maximum Profit is SQ .

On Output at KQ, the Difference between TR and TC is Increasing i.e. Total Profit is made at Increased Rates and is Maximum at Point S . Profit is also made at QL , but the Difference between TR and TC goes on Reducing and the Profit also begins to Decline . The TP Curve begins to Slope or Fall Down . On Point N, the Total Revenue (TR) is again Equal to Total Cost (TC) . This is called Break Even Point where thare is No Loss or No Profit . After Output Quantity OL , if the Firm Produces More and the Cost Increases , resulting in less Revenue i.e. TC > TR , the Firm Sustains Loss . The Total Revenue (TR) Curve is Below the x-axis . The Profit is Negative and Denotes the Loss to the Firm . In the Graph given , the Equilibrium of the Firm is at Output Quantity OQ as here the Difference between Total Revenue (TR) and Total Cost (TC) is the Maximum . Profit Quantity SQ is Maximum .

OR

"The Producer's Equilibrium refers to the situation in which Producer Maximizes his Profits (or Minimizes His Loss) and the producer has no intention to make any changes in his Existing Production or to make any changes in His Existing Expenditure on means of Production". Profit of the Firm Operating in Perfect Competition Market, is Maximised where the Price line (AR = MR) intersects the MC Curve and MC should be rising .

It is Difficult to find out the Maximum Distance between Total Revenue (TR) and Total Cost (TC) as Actual Point is found but only after Drawing Many Tangents . It is Not Possible to find out Per Unit Price on basis of Graph, as Price is Not shown Directly.

Perfect Competition Market :

The Marginal Revenue is the Extra Income Accrued to the Firm on Sale of Extra Unit of a Commodity . In the same manner , Marginal Cost (MC) is the Extra Expenditure which the Firm has to make for Production of an Extra Unit of a Commodity .

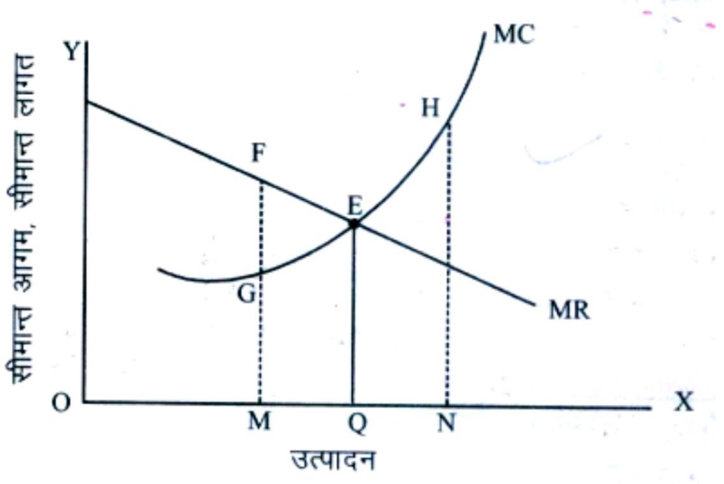

Imperfect and Monopoly Market :

Output Quantity is shown on x-axis and Marginal Revenue (MR) and Marginal Cost (MC) are shown on y-axis . In Imperfect Competition and Monopoly Markets, the Marginal Revenue Curve Slopes Down while Marginal Cost Slopes Down Initially and as the Output Units Increase , the marginal Cost (MC) too Increases . The First condition of the Firm's Equilibrium is that Marginal Revenue (MR) be Equal to Marginal Cost (MC) . This is shown by the Equilibrium Price .

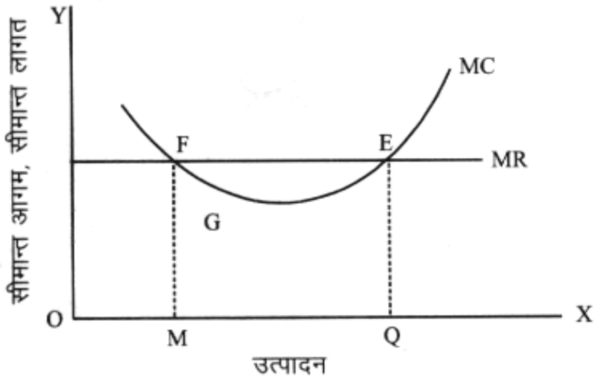

If the Output Quantity is OM , then the Marginal Revenue (FM) is more as compared to Marginal Cost (GM) . This Increase is till Output Level OQ and EFG is the Profit Region. If the Level of Output is ON , the Marginal Revenue (HN) is More than Marginal Cost (IN) . In this condition , the Firm sustains Loss (EHI) . Thus , the Firm's Equilibrium is at Point E , where MC = MR .

Perfect Competition Market :

On Point E , Marginal Revenue (MR) is Equal to Marginal Cost (MC) i.e. MR = MC . The first condition of the Equilibrium is Fulfilled here . The other condition of the MC Curve Intersecting MR Curve is also Fulfilled here . If the Firm determines Output Quantity OM , the First Condition is Fulfilled at Point F (MC = MC) . But in the absence of the Second Condition , before Point F , Marginal Cost is Less than Marginal Revenue MC < MR and so the Firm Sustains Loss .

The Firm's Equilibrium is at Output Level OQ , where both the Conditions are Fulfilled

(i) MC = MR and **(ii)** MC Curve Intersects MR Curve from Below

The Marginal Revenue–Marginal Cost method is the Better Method as Maximum Profit and Output Quantity can be found out easily . These Methods to find out the Equilibrium of a Firm can be used in All Types of Markets .. .:

Q 30. साख नियन्त्रण के किन्हीं तीन मात्रात्मक उपायों को विस्तार से समझाइये।

Explain Broadly any THREE Quantitative Methods of Credit Control .

OR

साख नियन्त्रण के किन्हीं तीन गुणात्मक उपायों को विस्तार से समझाइये।

Explain Broadly any THREE Qualitative Methods of Credit Control .

[6 Marks]

Ans.

साख नियन्त्रण के मात्रात्मक उपाय :

इन उपायों से प्रत्यक्ष रूप से कुल साख की मात्रा पर प्रभाव पड़ता है। ये उपाय केवल साख की मात्रा पर विशेष पर ध्यान देते है न कि साख की दिशा पर। जब देश की अर्थव्यवस्था में मुद्रा की तरलता की मात्रा का आधिक्य अथवा कमी हो जाती है तो केन्द्रीय बैंक साख की मात्रा एवं लागत को नियंत्रित करने के लिए जिन उपायो को अपनाता है उन्हें मात्रात्मक या परिणामात्मक उपाय कहा जाता है।

(i) बैंक दर नीति : "बैंक दर वह है, जिस दर पर केन्द्रीय बैंक अपने व्यापारिक बैंकों को ऋण उपलब्ध करवाता है।" बैंक दर वह दर जिस पर केन्द्रीय बैंक व्यापारिक बैंकों के विनिमय बिलों की पुर्नकटौती करता है भारत में यह कार्य भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा किया जाता है। जब देश में साख की मात्रा कम करनी होती है तब केन्द्रीय बैंक 'बैंक दर' को बढ़ा देती है। इसके विपरित साख का विस्तार करने के लिए बैंक दर घटा दी जाती है।

(ii) खुले बाजार की क्रियाएँ : केन्द्रीय बैंक द्वारा सरकारी प्रतिभूतियों को खरीदने व बेचने की क्रिया को खुले बाजार की क्रियाऐं कहा जाता है। जब अर्थव्यवस्था में साख की मात्रा कम करनी होती है, तो केन्द्रीय बैंक अपने पास संचित प्रतिभूतियों को वाणिज्यिक बैंकों को बेचना शुरू कर देता है। इसके विपरित यदि केन्द्रीय बैंक सरकारी प्रतिभूतियों को खरीदना शुरू करती है तो बैंकों के पास नकद कोषों में वद्धि हो जाती है। इससे अर्थव्यवस्था में साख का विस्तार होता है।

(iii) नकद कोषानुपात व वैधानिक तरलतानुपात में परिवर्तन : "व्यापारिक बैंकों द्वारा अपनी जमाओं का एक निश्चित अनुपात धनराशि के रूप में केन्द्रीय बैंक के पास रखना अनिवार्य होता है, जिसे वैधानिक तरलतानुपात कहते है। "बैंकिंग विधान के अनुसार बैंकों को अपनी कुल सम्पत्ति का एक निश्चित अनुपात अपने पास तरल या नकद रूप में रखना अनिवार्य होता है, जिसे नकद कोषानुपात (CRR) कहते है। जब केन्द्रीय बैंक को साख का विस्तार करना होता है तो उक्त दोनों अनुपातों को कम कर दिया जाता है एवं इसके विपरित जब साख का संकुचन या कमी करनी होती है तो उक्त अनुपातों में वद्धि कर दी जाती है।

अथवा

साख नियन्त्रण के गुणात्मक उपाय :

केन्द्रीय बैंक द्वारा साख नियंत्रण हेतू गुणात्मक उपाय भी अपनाये जाते है जिनका उद्देश्य अर्थव्यवस्था के विशिष्ट क्षेत्र में साख को सीमित करने का होता है। साख का प्रवाह अनुत्पादक से उत्पादक क्षेत्र की तरफ करने के लिए चयनात्मक साख नियंत्रण रीतियों द्वारा किया जाता है।

(i) चयनात्मक साख नियंत्रण – केन्द्रीय बैंक द्वारा विशिष्ट क्षेत्रों एवं विशिष्ट आवश्यकता वाले समूहों के लिये चयनात्मक साख के नियंत्रण के उपाय अपनाये जाते है, जो इस प्रकार है :

- ऋण की सीमाओं में परिवर्तन करना।
- विनिमय बिलों की ब्याज दरों/कटौती दरों में भिन्नता रखना।
- विशिष्ट क्षेत्रों में ऋणों की जाँच व नियंत्रण।
- विलासिता पूर्ण वस्तुओं के ऋण की अलग से किस्त निर्धारण करना।

(ii) साख की राशनिंग – इसके अन्तर्गत केन्द्रीय बैंक के द्वारा भिन्न–भिन्न क्षेत्रों के लिए साख की राशनिंग (अधिकतम सीमा निर्धारण) कर दी जाती है। यह सीमा बैंक के अनुसार अलग–अलग निर्धारित की जा सकती है। जैसे

- किसी बैंक के लिए बिलों को पुनः भुनाने की सुविधा को सीमित कर देना।
- सभी बैंकों के लिए बिलों को पुनः भुनाने की सुविधा को सीमित कर देना।
- बैंकों द्वारा विभिन्न उद्योगों अथवा व्यवसायों को दिये जाने वाले ऋण की सीमा अथवा कोटा निश्चित कर देना।

(iii) नैतिक दबाव – इसके अन्तर्गत केन्द्रीय बैंक व्यापारिक बैंकों को सलाह व मार्ग दर्शन प्रदान करता हे और केन्द्रीय बैंक अपने अधीनस्थ व्यापारिक बैंकों को सद्भाव व नैतिक अनुनय से भी अपनी साख नियंत्रित करने के लिए दबाव बना सकता है।

THREE Quantitative Methods of Credit Control are :

(i) Open Market Operations :

Open Market Operations refer to the Sale and Purchase of Government Securities in the Open Market by the Central bank . If Central Bank Sales the Securities of Government then the deposits of commercial bank decreases and due to that the credit creation ability of the commercial banks will also decreases. Thus, the credit creation by the commercial banks will also decreases. If central bank purchases the securities of government from the open market then the deposits of commercial bank increases and due to that the credit creation ability of the commercial banks will also increases. Thus, the credit creation by the commercial banks will also increases.

In the condition of inflation in the economy central bank sales the Government securities and in the condition of deflation in the economy central bank purchases the Government securities to control the problems.

(ii) Statutory Liquidity Ratio :

Statutory Liquidity Ratio refers to the minimum percentage of a bank deposits which is required to kept with themselves in cash. This ratio is determined by the central bank.

If central bank increases the SLR then commercial banks has to keep more percentage of their deposits with themselves, which means their credit creation ability will decreases. Thus the credit creation by the commercial banks will also decreases.

If central bank decreases the SLR then commercial banks has to keep less percentage of their deposits with themselves, which means their credit creation ability will increases. Thus the credit creation by the commercial banks will also increases.

In the condition of inflation in the economy central bank increases the SLR and in the condition of deflation in the economy central bank decreases the SLR to control the problems.

(iii) Cash Reserve Ratio :

Cash Reserve Ratio refers to the minimum percentage of a bank deposits which is required to kept with the central bank . All the commercial banks have to keep with the central bank a certain percentage of their deposits in the form of minimum cash reserve ratio. This ratio is determined by the central bank .

If central bank increases the CRR then commercial banks has to keep more percentage of their deposits with central bank, which means that their credit creation ability will decreases. Thus the credit creation by the commercial banks will also decreases.

If central bank decreases the CRR then commercial banks has to keep less percentage of their deposits with central bank, which means that their credit creation ability will increases. Thus the credit creation by the commercial banks will also increases.

In the condition of inflation in the economy central bank increases the CRR and in the condition of deflation in the economy central bank decreases the CRR to control the problems.

OR

Qualitative measures includes those measures of central bank which controls the direction of credit creation in economy. They are also termed as selective measures. It includes :

(i) **Margin Requirement :** The difference between the value of security and the amount of loan sanctioned is known as margin requirement. By changing the margin requirement Central bank can increase or decrease the credit creation in desired directions. If Central bank wants to increase the credit in a particular use then it will decrease the margin requirement for that use.

(ii) **Consumer Credit :** Loans given by commercial banks to the consumers to purchase the durable consumer goods, are known-as consumer's credit. Central bank can make the loans attractive or unattractive by following way :- (a) By changing the minimum down payments, (b) By changing the maximum period of repayment. (installment)

(iii) **Differentiated Rate of Interest :** Central bank can decide different interst rates for different uses to affect the direction of credit. Central bank will increase the rate of interst for those uses where it wants to discourage the credit and will decrease the rate of interst for those uses where it wants to encourage the credit.

Disclaimer Clause :

These Solutions are prepared by the Expert Faculty Team of RESONANCE .

Views and Answers provided may differ from **RBSE BOARD** due to difference in assumptions taken in support of the answers .

In such case answers as provided by "**RBSE BOARD**" will be deemed as final .